RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
दिसंबर
28
2024

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

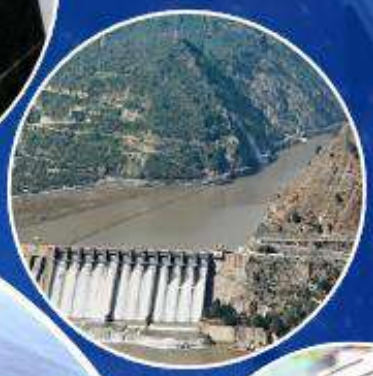

By Ankit Avasthi Sir

बेलगावी सत्र / Belagavi Session

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) ने बेलगावी में अपनी 100वीं वर्षगांठ मनाने के लिए कई कार्यक्रमों की योजना बनाई है। इन आयोजनों के जरिए पार्टी अपने ऐतिहासिक योगदान और राजनीतिक विरासत को याद करेगी।

परिचय:

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) ने 26-27 दिसंबर को कर्नाटक के बेलगावी (पूर्व में बेलगाम) में दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया है। यह आयोजन महात्मा गांधी द्वारा 1924 में अध्यक्षता किए गए ऐतिहासिक बेलगावी अधिवेशन की शताब्दी के उपलक्ष्य में किया जा रहा है।

कार्यक्रम के मुख्य बिंदु:

- कांग्रेस कार्यसमिति (CWC) का विस्तारित सत्र।
- गांधीजी के नेतृत्व और इस ऐतिहासिक अधिवेशन में उनके योगदान को सम्मानित करने के लिए एक रैली।

1924 के बेलगावी अधिवेशन(Belagavi Session) की पृष्ठभूमि:

- **गांधीजी की जेल से रिहाई:**
  - 1922 में यंग इंडिया में ब्रिटिश नीतियों की आलोचना पर महात्मा गांधी को छह वर्ष की सजा हुई।
  - स्वास्थ्य समस्याओं के चलते फरवरी 1924 में लगभग दो साल बाद रिहा हुए।
- **रिहाई के बाद चुनौतियां:**
  - हिंदू-मुस्लिम एकता की कमी।
  - कांग्रेस के भीतर गुटबाजी।
  - इन समस्याओं के समाधान के लिए गांधीजी ने 18 सितंबर से 8 अक्टूबर 1924 तक 21 दिन का उपवास किया।

अधिवेशन में शामिल प्रमुख नेता:

- जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, सरोजिनी नायडू जैसे वरिष्ठ कांग्रेस नेता।
- खिलाफत आंदोलन के नेता मुहम्मद अली जौहर और शौकत अली।

प्रमुख निर्णय और परिणाम:

असहयोग और सविनय अवज्ञा: गांधीजी ने असहयोग और सविनय अवज्ञा को ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रभावी आंदोलन के रूप में पुन: स्थापित किया।

खादी का प्रचार: खादी को आत्मनिर्भरता और स्वदेशी उद्योगों के प्रोत्साहन के प्रतीक के रूप में बढ़ावा दिया गया।

सांप्रदायिक सौहार्द: सभी धार्मिक और जातीय समूहों में एकता और सद्भाव पर बल दिया गया, जो ब्रिटिश विभाजनकारी नीतियों का प्रतिरोध था।

बेलगावी सत्र (Belagavi Session) का महत्व:

1. गांधीजी का नेतृत्व:

- महात्मा गांधी की अध्यक्षता ने अहिंसा, सांप्रदायिक सौहार्द और स्वराज के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाया।
- उनके विचार और रणनीतियों ने स्वतंत्रता संग्राम के भविष्य के आंदोलनों की नींव रखी।

2. स्वतंत्रता आंदोलन पर प्रभाव:

- सत्र ने किसानों में जागरूकता फैलाने का काम किया।
- खादी और ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा मिला, विशेष रूप से कर्नाटक में।
- कांग्रेस के नेतृत्व वाले आंदोलनों में किसानों की भागीदारी बढ़ी।

3. एकता और समावेशिता:

- सत्र में जवाहरलाल नेहरू, लाल लाजपत राय, सी. राजगोपालाचारी, सरोजिनी नायडू, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद जैसे नेता शामिल हुए।
- यह भारतीय नेताओं की स्वतंत्रता के लिए एकता और सामूहिक संकल्प का प्रतीक बना।

4. सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव:

- प्रसिद्ध गायक वीने शेषण्णा ने 'उदयवागली नम्मा चालुवा कन्नड नाडु' गीत प्रस्तुत किया।
- यह गीत कर्नाटक के एकीकरण आंदोलन का प्रतीक बना।
- इस आयोजन ने स्वतंत्रता संग्राम में सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की भूमिका को उजागर किया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (Indian National Congress):

स्थापना:

- **वर्ष**: 1885
- **स्थापक**: ए. ओ. ह्यूम
- पहली बैठक 28-31 दिसंबर 1885 को बॉम्बे (मुंबई)
- पहली बैठक की अध्यक्षता डब्ल्यू. सी. बनर्जी।

मनमोहन सिंह के 1991 के आर्थिक सुधार / Manmohan Singh's 1991 economic reforms

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का निधन हो गया। वे 92 साल के थे।, मनमोहन सिंह, 2004 में देश के 14वें प्रधानमंत्री बने थे। उन्होंने मई 2014 तक इस पद पर दो कार्यकाल पूरे किए थे। वे देश के पहले सिख और सबसे लंबे समय तक रहने वाले चौथे प्रधानमंत्री थे।

मनमोहन सिंह के आर्थिक सुधार में योगदान:

1991 के आर्थिक उदारीकरण (एलपीजी):

1. **लाइसेंस राज का अंत**: उद्योग स्थापित करने के लिए सरकारी मंजूरी की बाध्यता समाप्त की।
    - उदाहरण: आईटी क्षेत्र में कंपनियां जैसे इंफोसिस और विप्रो को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली।

कर सुधार और मुद्रा अवमूल्यन:

2. **कर कटौती**: कॉर्पोरेट कर को 1991 से पहले के 50% से घटाकर 1990 के दशक के मध्य तक लगभग 35% किया गया।
    - प्रभाव: व्यापारिक भावना को बढ़ावा मिला।
3. **मुद्रा अवमूल्यन**: भारतीय रुपये का अवमूल्यन किया गया जिससे प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि हुई।

कल्याणकारी योजनाएं:

4. **ग्रामीण क्षेत्रों के लिए कल्याण योजनाएं**:
    - **उदाहरण**:
        - 2005 में मनरेगा (महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम) लागू।
        - ग्रामीण ऋण को बढ़ाया, जिससे रोजगार और गरीबी उन्मूलन में मदद मिली।
    - **परिणाम**:
        - गरीबी दर 2004-05 के 37.2% से घटकर 2011-12 में 21.9% हो गई।
        - आय में वृद्धि के कारण भारत का मध्यम वर्ग तेजी से बढ़ा।

आर्थिक विकास:

5. **1991 के आर्थिक सुधारों का प्रभाव**:
    - भुगतान संकट का समाधान करने के लिए वित्तीय घाटा 1991 के 8.4% से घटाकर 1993 में 5.7% किया गया।
    - जीडीपी वृद्धि दर 1991-92 के 1.1% से बढ़कर 1992-93 में 5.3% हो गई।
    - औद्योगिक लाइसेंसिंग समाप्त, विदेशी निवेश को प्रोत्साहित किया।

उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण:

1. उदारीकरण (Liberalization):

- आर्थिक गतिविधियों पर नीतिगत प्रतिबंधों को कम करना।
- शुल्क में कमी या गैर-शुल्क बाधाओं को समाप्त करना। लाइसेंस राज से मुक्ति करना।

2. निजीकरण (Privatization):

- संपत्ति या व्यवसाय का स्वामित्व सरकार से निजी संस्थाओं को स्थानांतरित करना।

3. वैश्वीकरण (Globalization):

- आर्थिक गतिविधियों का राष्ट्रीय सीमाओं से परे विस्तार।
- लक्ष्य: वैश्विक बाजारों में प्रवेश, विदेशी निवेश और अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देना।

मनमोहन सिंह की विदेश संबंधों पर स्थायी छाप:

1. क्षेत्रीय और आर्थिक एकीकरण पर ध्यान केंद्रित:

- ASEAN, SAARC और अन्य एशियाई पड़ोसी देशों के साथ आर्थिक और कूटनीतिक संबंध गहरे किए।
- योगदान:
    - एक्ट ईस्ट पॉलिसी को बढ़ावा।
    - इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के प्रमुख साझेदारों के साथ संबंधों में सुधार।

2. भारत-अमेरिका सिविल न्यूक्लियर डील (2008):

- इस समझौते के माध्यम से भारत की परमाणु अलगाव स्थिति समाप्त हुई।
- अमेरिका के साथ रणनीतिक संबंध मजबूत हुए।
- महत्वपूर्ण प्रभाव:
    - भारत को एक जिम्मेदार परमाणु शक्ति के रूप में वैश्विक मान्यता मिली।

3. वैश्विक शासन में भारत की भूमिका का समर्थन: संयुक्त राष्ट्र (UN), अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF), और विश्व बैंक में सुधार की वकालत की।

- उद्देश्य: उभरती अर्थव्यवस्थाओं, विशेष रूप से भारत, की बढ़ती प्रतिष्ठा को मान्यता देना।
- भारत की आवाज़ को G20 और ब्रिक्स जैसे वैश्विक मंचों पर प्रमुखता दी।

4. रणनीतिक साझेदारियों को मजबूत करना: अमेरिका, यूरोपीय संघ, जापान और रूस जैसे प्रमुख वैश्विक शक्तियों के साथ संबंध गहरे किए।

चीन, तिब्बत में सबसे बड़े जलविद्युत बांध की योजना / China plans largest hydropower dam in Tibet

चीन ने ब्रह्मपुत्र नदी पर दुनिया के सबसे बड़े बांध के निर्माण को मंजूरी दे दी है। तिब्बत में भारतीय सीमा के करीब बनने वाला यह बांध, जिसकी लागत $137 बिलियन बताई जा रही है, दुनिया की सबसे बड़ी आधारभूत संरचना परियोजना होगी।

मुख्य बिंदु: चीन द्वारा विश्व के सबसे बड़े हाइड्रोपावर डैम की योजना:

डैम की विशेषताएं:

1. **स्थान**: तिब्बती पठार के पूर्वी किनारे पर यारलुंग ज़ांग्बो नदी के निचले हिस्से में बनाया जाएगा।
2. **उत्पादन क्षमता**:
   - वार्षिक 300 अरब किलोवाट-घंटा बिजली उत्पादन क्षमता।
   - यह वर्तमान में विश्व के सबसे बड़े थ्री गॉर्जेस डैम (88.2 अरब किलोवाट-घंटा) की क्षमता से तीन गुना अधिक होगी।
3. **खर्च**:
   - निर्माण लागत थ्री गॉर्जेस डैम (254.2 बिलियन युआन) से अधिक होने की संभावना।

पर्यावरण और विस्थापन के प्रभाव:

4. स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रभाव के बारे में चिंताएं।
   - क्षेत्र में पारिस्थितिक विविधता और तिब्बती पठार का समृद्ध पारिस्थितिकी तंत्र।
   - परियोजना से विस्थापित लोगों की संख्या अभी स्पष्ट नहीं।

चीन का पक्ष:

5. चीन का दावा है कि तिब्बत में हाइड्रोपावर परियोजनाएं:
   - पर्यावरण और डाउनस्ट्रीम जल आपूर्ति पर बड़ा प्रभाव नहीं डालेंगी।
   - कार्बन तटस्थता लक्ष्यों को पूरा करने में मदद करेंगी।
   - इंजीनियरिंग, उद्योग, और रोजगार सृजन को बढ़ावा देंगी।

भारत और बांग्लादेश की चिंताएं:

6. **नदी प्रवाह पर प्रभाव:**
   - यारलुंग ज़ांग्बो नदी भारत में ब्रह्मपुत्र बनकर अरुणाचल प्रदेश और असम से होते हुए बांग्लादेश में बहती है।
   - डैम का प्रवाह, नदी की दिशा, और स्थानीय पारिस्थितिकी पर प्रभाव संभावित चिंता का विषय।

चुनौतियां और क्षमता:

7. यारलुंग ज़ांग्बो का एक खंड 50 किमी के भीतर 2,000 मीटर की ऊंचाई से गिरता है, जो परियोजना को तकनीकी रूप से चुनौतीपूर्ण लेकिन उच्च ऊर्जा उत्पादन क्षमता वाला बनाता है।

भारत-चीन सीमा विवाद:

- **सीमा विवाद**: भारत-चीन के बीच 3,488 किलोमीटर लंबी सीमा है, लेकिन यह पूरी तरह से स्पष्ट रूप से चिह्नित नहीं है। कई हिस्सों में दोनों देशों के बीच सहमति आधारित "वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC)" नहीं है।
- **LAC का गठन**: यह रेखा 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद बनी, जो भारतीय और चीनी नियंत्रण वाले क्षेत्रों को अलग करती है।
  - भारत के अनुसार, LAC की लंबाई 3,488 किलोमीटर है।
  - चीन के अनुसार, यह केवल लगभग 2,000 किलोमीटर है।

तीन भागों में बंटी सीमा:

पश्चिमी क्षेत्र (लद्दाख):
- विवाद जॉनसन रेखा (1860 में ब्रिटिश द्वारा प्रस्तावित) पर है, जो अक्साई चिन को जम्मू-कश्मीर का हिस्सा बताती है।
- चीन मैकडोनाल्ड रेखा (1890) को मान्यता देता है, जो अक्साई चिन को उसके अधिकार क्षेत्र में दिखाती है।

मध्य क्षेत्र (उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश):
- यह क्षेत्र ज्यादातर विवादित नहीं है।
- यहां दोनों देशों ने नक्शों का आदान-प्रदान किया है और सीमा पर आम सहमति है, हालांकि औपचारिक सीमांकन नहीं हुआ है।

पूर्वी क्षेत्र (अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम):
- विवाद मैकमोहन रेखा (1914 शिमला समझौता) पर है, जिसे ब्रिटिश भारत, तिब्बत और चीन के प्रतिनिधियों ने तय किया था।
- चीन इसे नहीं मानता और पूरे अरुणाचल प्रदेश को तिब्बत का हिस्सा बताता है।
- तवांग मठ और ल्हासा मठ के ऐतिहासिक संबंधों का हवाला देकर चीन अरुणाचल पर दावा मजबूत करता है।

बैड लोन में गिरावट / Decline in bad loans

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) की रिपोर्ट **"भारत में बैंकिंग का रुझान और प्रगति 2023-24"** के अनुसार, बैंकों की परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार हुआ है। मार्च 2024 के अंत तक सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (GNPA) अनुपात 2.7% पर आ गया, जो पिछले 13 वर्षों का सबसे कम स्तर है। सितंबर 2024 के अंत तक यह और घटकर 2.5% हो गया।

प्रमुख बिंदु (FY24 रिपोर्ट):

1. **मजबूत बैलेंस शीट**:
   - वित्त वर्ष 2024 में देश के वाणिज्यिक बैंकों की समेकित बैलेंस शीट मजबूत रही।
   - क्रेडिट और जमा दोनों में निरंतर वृद्धि देखी गई।
2. **NPA अनुपात में गिरावट**:
   - **मार्च 2010-11**: बैंकों का सकल NPA अनुपात 2.35% था।
   - **मार्च 2024**: सकल NPA में सालाना 15.9% की कमी दर्ज की गई।
   - **सितंबर 2024**: सकल NPA अनुपात और घटकर 2.5% पर आ गया।
3. **क्षेत्रवार प्रदर्शन**:
   - **कृषि क्षेत्र**: सकल NPA अनुपात 6.2% (सबसे अधिक)।
   - **रिटेल लोन**: सकल NPA अनुपात 1.2% (सबसे कम)।
   - **शिक्षा ऋण**: सितंबर 2024 के अंत तक सकल NPA अनुपात 2.7%।
     - रिटेल लोन सेगमेंट में सबसे अधिक रहा।
     - इसके बाद क्रेडिट कार्ड और उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं के ऋण का स्थान।

क्या हैं बैड लोन / गैर-निष्पादित परिसंपत्तियां (NPA)?

1. **बैड लोन (Bad Loan) अर्थ**:
   - **बैड लोन** वे ऋण होते हैं जिन्हें गैर-निष्पादित परिसंपत्तियां (NPA) घोषित किया गया है।
   - इसका मतलब है कि उधारकर्ता ऋणदाता को भुगतान करने में असमर्थ है।
2. **गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (Non-performing assets)**:
   - NPA वे ऋण या अग्रिम हैं जो समय पर चुकाए नहीं गए।
   - सामान्यत:, यदि उधारकर्ता 90 दिनों या उससे अधिक समय तक भुगतान करने में विफल रहता है, तो ऋण को NPA घोषित किया जाता है।

NPA के दो मुख्य वर्गीकरण:

सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (GNPA):
- यह उन सभी ऋणों की कुल राशि है, जो डिफॉल्ट हो चुके हैं।

शुद्ध गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (NNPA):
- यह GNPA में से उस राशि को घटाकर निकाली जाती है, जिसे बैंक ने संभावित नुकसान के लिए आरक्षित (प्रावधान) किया है।
- प्रावधान का मतलब है बैंकों द्वारा संभावित घाटे को कवर करने के लिए अलग रखी गई राशि।

बैड लोन के कारण और प्रभाव:

बैड लोन के कारण:

1. **खराब ऋण प्रथाएं**: उधार देते समय बैंकों द्वारा पर्याप्त क्रेडिट मूल्यांकन और उचित जांच का अभाव।
2. **आर्थिक मंदी**: आर्थिक संकट और उद्योग-विशेष की समस्याओं के कारण उधारकर्ताओं की चुकाने की क्षमता प्रभावित होती है।
3. **धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार**: ऋण प्रक्रिया में धोखाधड़ी या भ्रष्टाचार बैड लोन को जन्म देते हैं।
4. **नियामक समस्याएं**: कमजोर निगरानी और जोखिम मूल्यांकन की कमी बैड लोन को बढ़ावा देती है।

बुरे ऋणों का प्रभाव:

1. **आर्थिक मंदी**: बैड लोन की अधिकता से क्रेडिट उपलब्धता घटती है, जिससे आर्थिक विकास और निवेश धीमा हो जाता है।
2. **बैंकों की वित्तीय सेहत**: बैंकों को अधिक प्रावधान करना पड़ता है, जिससे उनकी लाभप्रदता और स्थिरता पर असर पड़ता है।
3. **कम उधार क्षमता**: गैर-निष्पादित ऋणों में अधिक पूंजी फंसी होने से उत्पादक क्षेत्रों के लिए उधार कम हो जाता है।
4. **निवेशकों का भरोसा**: बैड लोन का उच्च स्तर बैंकिंग क्षेत्र पर निवेशकों के विश्वास को कमजोर करता है।
5. **सरकारी दबाव**:सरकार को बेलआउट या पुनर्पूंजीकरण के लिए हस्तक्षेप करना पड़ता है, जिससे वित्तीय दबाव बढ़ता है।

दुर्लभ मृदा खनिज / Rare Earth Minerals

चीन की आपूर्ति श्रृंखला बाधाओं और सुरक्षा चिंताओं के बीच, भारत अमेरिका, लैटिन अमेरिका, अफ्रीका के साथ समझौतों से आपूर्ति स्रोतों को विविध बना रहा है। इसी में कज़ाकिस्तान एक रणनीतिक और निकट विकल्प बनकर उभरा है।

भारत के लिए दुर्लभ मृदा खनिजों (Rare Earth Minerals) का महत्व:

1. भंडारण और उत्पादन:

- भारत विश्व में **पांचवां सबसे बड़ा** दुर्लभ मृदा खनिज भंडारणकर्ता है (6% वैश्विक भंडार)।
- **उत्पादन में कमी**: भारत केवल वैश्विक उत्पादन का **1%** योगदान देता है और अपनी अधिकांश आवश्यकताएं चीन से पूरी करता है।
- 2018-19 में, दुर्लभ मृदा धातुओं के **92% आयात (मूल्य के अनुसार)** और **97% आयात (मात्रा के अनुसार)** चीन से हुए।

2. आर्थिक योगदान:

- दुर्लभ मृदा खनिज भारतीय अर्थव्यवस्था में लगभग **$200 बिलियन का मूल्य** जोड़ते हैं।
- खनन और निर्माण क्षेत्र के माध्यम से यह क्षेत्र **10,000 प्रत्यक्ष और 50,000 अप्रत्यक्ष नौकरियां** उत्पन्न कर सकता है।

3. भारत में उपलब्ध दुर्लभ मृदा खनिज:

- **उपलब्ध खनिज:**
  - **लैंथेनम, सेरियम, नियोडिमियम, प्रासियोडिमियम और समेरियम।**
  - **मोनाज़ाइट और थोरियम** प्रमुख स्रोत हैं।
- **अनुपलब्ध खनिज:**
  - **डिसप्रोसियम, टर्बियम और यूरोपियम (Heavy REEs)** भारतीय भंडार में निष्कर्षण योग्य मात्रा में उपलब्ध नहीं।

4. वैश्विक निर्भरता:

- भारत दुर्लभ मृदा खनिजों की आपूर्ति के लिए **चीन पर अत्यधिक निर्भर** है।
- दुर्लभ मृदा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता भारत की रणनीतिक और आर्थिक सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

चीन का दुर्लभ मृदा खनिजों पर एकाधिकार:

1. वैश्विक उत्पादन और आपूर्ति में प्रभुत्व:

- चीन के पास विश्व के दुर्लभ मृदा खनिज भंडार का **एक-तिहाई से अधिक** नियंत्रण है।
- वैश्विक उत्पादन का लगभग **70%** चीन द्वारा किया जाता है, जो इसे दुनिया का प्रमुख आपूर्तिकर्ता बनाता है।
- भारत अपनी घरेलू उत्पादन की कमी के कारण दुर्लभ मृदा खनिजों के **60% आयात** के लिए चीन पर निर्भर है।

2. आपूर्ति श्रृंखला पर रणनीतिक नियंत्रण:

- **चीन की क्षमता:** चीन द्विपक्षीय विवादों के दौरान खनिज और तकनीकी आपूर्ति को बाधित करने में सक्षम है।

क्या कज़ाखस्तान दुर्लभ मृदा खनिज बाजार में चीन का प्रतिस्पर्धी विकल्प बन सकता है?

1. साझेदारों का विविधीकरण:

- कज़ाकिस्तान पहले ही **जापान, जर्मनी, अमेरिका, दक्षिण कोरिया, और यूरोपीय संघ** जैसे देशों के साथ खनन समझौतों कर चुका है।
- यह कज़ाखस्तान को विश्वसनीय आपूर्तिकर्ता के रूप में उभरने का संकेत देता है।

2. उन्नत खनन प्रौद्योगिकियां:

- कज़ाकिस्तान **उन्नत प्रौद्योगिकियों और साझेदारी** में निवेश कर रहा है ताकि खनन प्रक्रियाओं को बेहतर बनाया जा सके और उत्पादन क्षमता में वृद्धि की जा सके।
- यह कज़ाकिस्तान की उत्पादन दक्षता को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है।

3. रणनीतिक स्थिति:

- कज़ाकिस्तान की **केंद्रीय एशिया में स्थिति** और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी परियोजनाओं (जैसे अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा) में सहयोग, इसे **चीन के मुकाबले एक आकर्षक विकल्प** बनाता है।
- भारत जैसे देशों के लिए, जो अपने स्रोतों को विविधतापूर्ण बनाने की कोशिश कर रहे हैं, कज़ाकिस्तान एक बेहतर विकल्प हो सकता है।

4. सरकार की प्राथमिकता:

- कज़ाकिस्तान सरकार **लिथियम, बैटरी सामग्री और गर्मी-प्रतिरोधी मिश्र धातुओं** जैसी प्रौद्योगिकियों में निवेश कर रही है, जो इसके प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति को मजबूत कर सकते हैं।
- यह कदम कज़ाकिस्तान को वैश्विक दुर्लभ मृदा खनिज बाजार में प्रमुख खिलाड़ी बनने में मदद कर सकता है।

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार / Prime Minister's National Child Award

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 17 बच्चों (दस लड़कियों और सात लड़कों) - को राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र, नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया। यह पुरस्कार वीर बाल दिवस के अवसर पर घोषित और प्रदान किया गया।

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार (PMRBP) क्या है?

परिचय:

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार (PMRBP) बच्चों की ऊर्जा, संकल्प, क्षमता, उत्साह और जोश का उत्सव मनाने के लिए आयोजित किया जाता है।

- यह पुरस्कार उन बच्चों को प्रदान किया जाता है जिनकी कला और संस्कृति, वीरता, पर्यावरण, नवाचार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, समाज सेवा और खेल के क्षेत्र में उत्कृष्टता है, और जो राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता के योग्य होते हैं।

पुरस्कार का स्वरूप:

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार 5 से 18 वर्ष तक के बच्चों को उनके असाधारण प्रदर्शन, क्षमताओं और उपलब्धियों के लिए प्रदान किया जाता है।

- इस पुरस्कार के तहत एक पदक, प्रमाणपत्र और 1 लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया जाता है।
- प्रत्येक वर्ष, अधिकतम 25 बच्चों को सम्मानित किया जाता है।
- प्रत्येक पुरस्कार प्राप्तकर्ता को एक पदक, 1 लाख रुपये का नकद पुरस्कार, प्रमाणपत्र और स्मृति पत्र दिया जाता है।
- पुरस्कारों का चयन महिला और बाल विकास मंत्री की अध्यक्षता में एक चयन समिति द्वारा किया जाता है।
- ये पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति द्वारा हर साल गणतंत्र दिवस से पहले सप्ताह में प्रदान किए जाते हैं।

पृष्ठभूमि:

भारत सरकार बच्चों की असाधारण उपलब्धियों के लिए पुरस्कार प्रदान करती रही है। इन पुरस्कारों को व्यक्तिगत और संस्थागत दोनों स्तरों पर दिया जाता है।

अब तक विभिन्न पुरस्कार निम्नलिखित श्रेणियों में दिए गए हैं:

1. **राष्ट्रीय बाल पुरस्कार** (असाधारण उपलब्धियों के लिए) - 1996 से।
2. **राष्ट्रीय बाल कल्याण पुरस्कार** (व्यक्तिगत) - 1979 से।
3. **राष्ट्रीय बाल कल्याण पुरस्कार** (संस्थागत) - 1979 से।
4. **राजीव गांधी मानव सेवा पुरस्कार** - 1994 से।

2017-18 से इन पुरस्कारों को निम्नलिखित श्रेणियों में पुन: संज्ञापित किया गया है:

1. **बाल शक्ति पुरस्कार** (पहले राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के नाम से जाना जाता था)।
2. **बाल कल्याण पुरस्कार** (व्यक्तिगत और संस्थागत) (पहले राष्ट्रीय बाल कल्याण पुरस्कार के नाम से जाना जाता था)।

2022 से, बाल कल्याण पुरस्कार (व्यक्तिगत और संस्थागत) समाप्त कर दिया गया है और बाल शक्ति पुरस्कार को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार में शामिल कर लिया गया है।

योग्यता:

- पुरस्कार के लिए भारतीय नागरिक और भारत के निवासी बच्चे पात्र होंगे।
- बच्चे की आयु 5 से 18 वर्ष के बीच होनी चाहिए (31 जुलाई तक)।
- उस बच्चे द्वारा की गई घटना/उपलब्धि पिछले दो वर्षों के भीतर होनी चाहिए, आवेदन/नामांकन प्राप्त करने की अंतिम तिथि के बाद।

पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की संख्या:

- 25 पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं, हालांकि राष्ट्रीय चयन समिति की इच्छा पर इस संख्या में छूट दी जा सकती है।

पोलियो क्या है? / What is polio?

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की रिपोर्ट के अनुसार, इस साल सितंबर से पांच देशों - **फिनलैंड, जर्मनी, पोलैंड, स्पेन और यूनाइटेड किंगडम** - में सीवेज निगरानी के दौरान पोलियो वायरस का पता चला है। यह स्थिति चिंता बढ़ाने वाली है क्योंकि पोलियो उन्मूलन के प्रयासों पर इसका प्रभाव पड़ सकता है।

पोलियो क्या है?

- पोलियो एक गंभीर और संभावित घातक वायरल बीमारी है, जो तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करती है।
- यह बीमारी स्थायी लकवे (पैरालिसिस) या मृत्यु का कारण बन सकती है।

पोलियो के प्रकार:

पोलियो वायरस के तीन अलग-अलग प्रकार हैं:

1. **वाइल्ड पोलियोवायरस टाइप 1 (WPV1)**
2. **वाइल्ड पोलियोवायरस टाइप 2 (WPV2)**
3. **वाइल्ड पोलियोवायरस टाइप 3 (WPV3)**

- तीनों प्रकार लक्षणों में समान हैं और लकवे या मृत्यु का कारण बन सकते हैं।
- हालांकि, इनके **आनुवंशिक और विषाणु संबंधी अंतर** होते हैं, इसलिए इन सभी को अलग-अलग खत्म करना जरूरी है।

संक्रमण का तरीका:

- यह वायरस मुख्य रूप से **मल-मुख मार्ग** (फीसल-ओरल रूट) से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है।
- कभी-कभी यह **प्रदूषित पानी या भोजन** के माध्यम से भी फैल सकता है।

किसे प्रभावित करता है?

- यह बीमारी मुख्य रूप से **5 साल से कम उम्र के बच्चों** को प्रभावित करती है।
- वायरस आंत में बढ़ता है और वहां से **तंत्रिका तंत्र** पर हमला कर सकता है, जिससे लकवा हो सकता है।

पोलियो के लक्षण:

1. **सामान्य लक्षण (हल्के मामले):**
   - ज्यादातर लोग पोलियो से संक्रमित होने पर बीमार महसूस नहीं करते।
   - कुछ लोगों में निम्नलिखित हल्के लक्षण हो सकते हैं:
     - बुखार
     - थकान
     - मतली (उल्टी जैसा महसूस होना)
     - सिरदर्द
     - हाथ और पैरों में दर्द

पोलियो उन्मूलन की स्थिति:

उन्मूलन:

- **टाइप 2 पोलियोवायरस** को सितंबर 2015 में और **टाइप 3 पोलियोवायरस** को अक्टूबर 2019 में समाप्त घोषित किया गया।
- अब केवल टाइप 1 पोलियोवायरस शेष है।
- **WHO दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र** 2014 में और **WHO अफ्रीकी क्षेत्र** 2020 में वाइल्ड पोलियोवायरस मुक्त घोषित हुए।
- भारत को मार्च 2014 में **पोलियो मुक्त** प्रमाणित किया गया और यह स्थिति बरकरार है।
- **पाकिस्तान और अफगानिस्तान** विश्व के केवल दो देश हैं जहां पोलियो अभी भी स्थानिक है।

वैश्विक प्रयास:

1. **ग्लोबल पोलियो उन्मूलन पहल (GPEI):**
   - इसका उद्देश्य सभी प्रकार के वाइल्ड और वैक्सीन-जनित पोलियोवायरस को समाप्त करना है।
   - इसके चार स्तंभ हैं:
     - नियमित टीकाकरण
     - पूरक टीकाकरण
     - निगरानी
     - लक्षित अभियान
   - **2022 वर्ल्ड हेल्थ समिट** में GPEI को समाप्त करने के लिए $2.6 बिलियन का वादा किया गया।
   - **ग्लोबल पोलियो उन्मूलन रणनीति 2022-2026** पोलियो मुक्त विश्व के लिए रोडमैप प्रदान करती है।
   - **विश्व पोलियो दिवस** 24 अक्टूबर को मनाया जाता है, जो **जोनास साल्क** के जन्मदिन का प्रतीक है, जिन्होंने पहला पोलियो टीका विकसित किया।

भारत के प्रयास:

1. **पल्स पोलियो कार्यक्रम (1995):**
   - यह **ओरल पोलियो वैक्सीन (OPV)** पर आधारित था।
   - इसने 1 करोड़ से अधिक बच्चों को कवर किया और 5 साल से कम उम्र के प्रत्येक बच्चे का टीकाकरण सुनिश्चित किया।
   - इस अभियान का प्रसिद्ध नारा था **"दो बूंद जिंदगी की"।**
2. **नियमित टीकाकरण और प्रणाली सुदृढ़ीकरण:**
   - **UIP (सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम)** के तहत पोलियो, डिप्थीरिया, खसरा, टेटनस आदि के खिलाफ मुफ्त टीके उपलब्ध कराए गए।
3. **इनएक्टिवेटेड पोलियोवायरस वैक्सीन (IPV) का परिचय (2015):** यह विशेष रूप से टाइप 2 पोलियोवायरस के खिलाफ अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान करता है।

बॉल्ड ईगल / Bald Eagle

बाल्ड ईगल को अब आधिकारिक तौर पर अमेरिका का राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया है। यह पक्षी अमेरिका की आजादी, शक्ति और गौरव का प्रतीक माना जाता है और लंबे समय से अमेरिकी संस्कृति का अहम हिस्सा रहा है।

बॉल्ड ईगल (Bald Eagle):

बॉल्ड ईगल उत्तरी अमेरिका का मूल निवासी पक्षी है और इसे अमेरिका का राष्ट्रीय पक्षी और प्रतीक माना जाता है। इसे इसकी अनूठी उपस्थिति और प्रतीकात्मक महत्व के लिए जाना जाता है।

विशेषताएं:

रूप-रंग:

- बॉल्ड ईगल का सिर और पूंछ सफेद होते हैं, जबकि शरीर और पंख गहरे भूरे रंग के होते हैं।
- इसकी चोंच पीली, बड़ी और मुड़ी हुई होती है।
- इसके पंजे मजबूत और नुकीले होते हैं, जो इसे शिकार करने में मदद करते हैं।

आकार और वजन:

- लंबाई: 70-102 सेंटीमीटर
- पंखों का फैलाव: लगभग 180-230 सेंटीमीटर
- वजन: 3 से 6 किलोग्राम (मादा का वजन नर से अधिक होता है)।

आहार:

- बॉल्ड ईगल मांसाहारी पक्षी है।
- मुख्य रूप से मछलियां इसका प्राथमिक भोजन हैं।
- यह जल पक्षियों का शिकार करता है और मृत जानवरों (कैरियन) को भी खाता है।

प्रतीकात्मक महत्व:

अमेरिकी प्रतीक:

- बॉल्ड ईगल को 1782 में अमेरिका के ग्रेट सील पर राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया गया।
- यह शक्ति, स्वतंत्रता और स्वायत्तता का प्रतीक है।
- इसे आधिकारिक दस्तावेज़ों, संधियों और राष्ट्रपति आदेशों में उपयोग किया जाता है।

वितरण और निवास:

- यह कनाडा, अमेरिका, मेक्सिको और फ्रेंच द्वीप क्षेत्र सेंट पियरे और मिकेलोन में प्रजनन करता है।
- यह मुख्य रूप से झीलों, नदियों, तटीय क्षेत्रों और जंगलों के पास पाया जाता है।

संरक्षण प्रयास:

- **राष्ट्रीय प्रतीक अधिनियम (1940):**
  - बॉल्ड ईगल को बचाने के लिए इस अधिनियम के तहत इसे बेचना या शिकार करना अवैध है।
- **IUCN रेड लिस्ट:**
  - इसे "कम चिंताजनक" (Least Concern) श्रेणी में सूचीबद्ध किया गया है।
- अमेरिका में संरक्षित क्षेत्रों और कानूनों के तहत इनकी संख्या में वृद्धि हुई है।

सरदार उधम सिंह की 125वीं जयंती

26 दिसंबर को भारत ने सरदार उधम सिंह की 125वीं जयंती मनाई। वह साहस, न्याय और अडिग संकल्प के प्रतीक माने जाते हैं।

परिचय:

- **जन्म:** सरदार उधम सिंह का जन्म 26 दिसंबर 1899 को पंजाब के सुनाम (अब पंजाब के संगरूर जिले में) में हुआ था। उनका असली नाम शेर सिंह था।
- **पारिवारिक पृष्ठभूमि:** उधम सिंह ने बचपन में ही अपने माता-पिता को खो दिया। उनका पालन-पोषण एक अनाथालय में हुआ।
- वह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय थे और **गदर पार्टी** तथा **हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA)** से जुड़े थे।

जलियांवाला बाग हत्याकांड और प्रतिशोध:

- 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में, जनरल डायर और तत्कालीन पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओ'डायर के आदेश पर निहत्थे भारतीयों पर गोलियां चलाई गईं।
- इस हत्याकांड में 1000 से अधिक लोग मारे गए थे और हजारों घायल हुए थे।
- सरदार उधम सिंह जलियांवाला बाग हत्याकांड के प्रत्यक्षदर्शी थे, और इस घटना ने उनके जीवन को पूरी तरह बदल दिया।

जनरल ओ'डायर की हत्या:

- 21 साल बाद, 13 मार्च 1940 को, सरदार उधम सिंह ने लंदन के कैक्सटन हॉल में जनरल माइकल ओ'डायर की हत्या कर दी।
- यह कार्रवाई उन्होंने जलियांवाला बाग हत्याकांड का बदला लेने के लिए की थी।

न्यायिक प्रक्रिया और शहादत:

- उन्हें गिरफ्तार कर लंदन में मुकदमा चलाया गया।
- हिरासत के दौरान उन्होंने अपना नाम 'राम मोहम्मद सिंह आजाद' बताया, जो भारत की तीन प्रमुख धार्मिक परंपराओं (हिंदू, मुस्लिम और सिख) की एकता और आजादी के प्रति उनकी भावना को दर्शाता है।
- 31 जुलाई 1940 को उन्हें लंदन के पेंटनविले जेल में फांसी दी गई।

महत्वपूर्ण योगदान और विरासत:

- उधम सिंह का जीवन त्याग, देशभक्ति और न्याय के लिए संघर्ष का प्रतीक है।
- 1974 में, उनकी अस्थियां भारत लाई गईं और पंजाब के सुनाम में सम्मानपूर्वक दफन की गईं।
- भारत सरकार ने उनकी स्मृति में डाक टिकट भी जारी किए हैं।

रोचक तथ्य:

- उधम सिंह को ब्रिटिश पुलिस ने 'खतरनाक क्रांतिकारी' के रूप में देखा।
- उनका बलिदान भगत सिंह और अन्य क्रांतिकारियों के विचारों से प्रेरित था।
- भारत में, उन्हें **'शहीद-ए-आजम'** का दर्जा दिया गया है।

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

ANKIT AVASTHI

Video will be upload soon !

RRB NTPC
TEST SERIES
100+ Mock Test
78 Sectional Test
40+ years PYPs
60+ Current affairs
TEST
Only
99
Per
Year
Buy Now

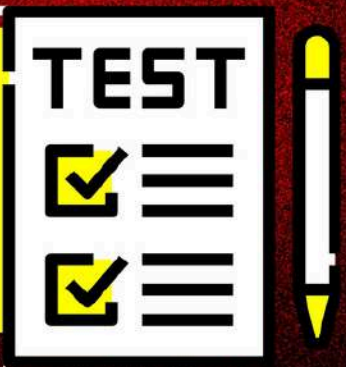

GA FOUNDATION

Hand Written Notes

Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Ankit Inspires India

₹ Only 1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

7878158882

APNI PATHSHALA

UPPSC,RO/ARO,BPSC,UP TEST SERIES

UPPSC
(TEST SERIES)
- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

RO/ARO
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

BPSC
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299 YEAR

SSC (TEST SERIES)
- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

RPF (TEST SERIES)
- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

NCERT COMPLETE

FOUNDATION BATCH

FOR ALL

- POLITY
- ECONOMICS
- HISTORY
- GEOGRAPHY

- DAILY LIVE CLASSES
- , WEEKLY TEST
- CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
- LIVE DOUBT SESSIONS
- DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs 4999/-

Apni Pathshala 7878158882 Apni.Pathshala kaankit AnkitAvasthiSir Avasthiankit

ONLY
POLITY
1499
RS
DAILY LIVE CLASSES
, WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTISE PROBLEM
Apni Pathshala
7878158882
Apni.Pathshala
kaankit
AnkitAvasthiSir
Avasthiankit

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,

Stenographer (Grades C & D)

Only at

99/-Year

Enroll Now !